रविवार 26 मई, 2019

विषय — आत्मा और शरीर

स्वर्ण पाठः भजन संहिता 103: 1

''हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे.''

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 103 : 2-5, 8, 11**

2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
4 वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बान्धता है,
5 वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है॥
8 यहोवा दयालु और अनुग्रहकरी, विलम्ब से कोप करने वाला और अति करूणामय है।
11 जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊंचा है, वैसे ही उसकी करूणा उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. **भजन संहिता 25: 1, 2 (*से*:)**

1 हे यहोवा मैं अपने मन को तेरी ओर उठाता हूं।
2 हे मेरे परमेश्वर, मैं ने तुझी पर भरोसा रखा है,

2. **सभोपदेशक 2: 24, 26 (*से 1st.*)**

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

24 मनुष्य के लिये खाने-पीने और परिश्रम करते हुए अपने जीव को सुखी रखने के सिवाय और कुछ भी अच्छा नहीं। मैं ने देखा कि यह भी परमेश्वर की ओर से मिलता है।
26 जो मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा है, उसको वह बुद्धि और ज्ञान और आनन्द देता है; परन्तु पापी को वह दु:खभरा काम ही देता है कि वह उसका देने के लिये संचय कर के ढेर लगाए जो परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा हो। यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है॥

3. प्रेरितों के काम 3 : 1-13, 19, 25, 26

1 पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे।
2 और लोग एक जन्म के लंगड़े को ला रहे थे, जिस को वे प्रति दिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहलाता है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जाने वालों से भीख मांगे।
3 जब उस ने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा, तो उन से भीख मांगी।
4 पतरस ने यूहन्ना के साथ उस की ओर ध्यान से देखकर कहा, हमारी ओर देख।
5 सो वह उन से कुछ पाने की आशा रखते हुए उन की ओर ताकने लगा।
6 तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूं: यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।
7 और उस ने उसका दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया: और तुरन्त उसके पावों और टखनों में बल आ गया।
8 और वह उछलकर खड़ा हो गया, और चलने फिरने लगा और चलता; और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उन के साथ मन्दिर में गया।
9 सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देखकर।
10 उस को पहचान लिया कि यह वही है, जो मन्दिर के सुन्दर फाटक पर बैठ कर भीख मांगा करता था; और उस घटना से जो उसके साथ हुई थी; वे बहुत अचम्भित और चकित हुए॥
11 जब वह पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत अचम्भा करते हुए उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है, उन के पास दौड़े आए।
12 यह देखकर पतरस ने लोगों से कहा; हे इस्त्राएलियों, तुम इस मनुष्य पर क्यों अचम्भा करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो, कि मानो हम ही ने अपनी सामर्थ या भक्ति से इसे चलना-फिरता कर दिया।
13 इब्राहीम और इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे बाप दादों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु की महिमा की, जिसे तुम ने पकड़वा दिया, और जब पीलातुस ने उसे छोड़ देने का विचार किया, तब तुम ने उसके साम्हने उसका इन्कार किया।
19 इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिस से प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं।
25 तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बाप दादों से बान्धी, जब उस ने इब्राहीम से कहा, कि तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएंगे।
26 परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर पहिले तुम्हारे पास भेजा, कि तुम में से हर एक को उस की बुराइयों से फेरकर आशीष दे॥

4. प्रेरितों के काम 14 : 8-18

8 लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पांवों का निर्बल था: वह जन्म ही से लंगड़ा था, और कभी न चला था।
9 वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था और इस ने उस की ओर टकटकी लगाकर देखा कि इस को चंगा हो जाने का विश्वास है।
10 और ऊंचे शब्द से कहा, अपने पांवों के बल सीधा खड़ा हो: तब वह उछलकर चलने फिरने लगा।
11 लोगों ने पौलुस का यह काम देखकर लुकाउनिया भाषा में ऊंचे शब्द से कहा; देवता हमारे पास उतर आए हैं।
12 और उन्होंने बरनबास को ज्यूस, और पौलुस को हिरमेस कहा, क्योंकि वह बातें करने में मुख्य था।
13 और ज्यूस के उस मन्दिर का पुजारी जो उस के नगर के साम्हने था, बैल और फूलों के हार फाटकों पर लाकर लोगों के साथ बलिदान करना चाहता था।
14 परन्तु बरनबास और पौलुस प्रेरितों ने जब सुना, तो अपने कपड़े फाड़े, और भीड़ में लपक गए, और पुकार कर कहने लगे;
15 हे लोगो तुम क्या करते हो? हम भी तो तुम्हारे समान दु:ख-सुख भोगी मनुष्य हैं, और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं, कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीवते परमेश्वर की ओर फिरो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है बनाया।
16 उस ने बीते समयों में सब जातियों को अपने अपने मार्गों में चलने दिया।
17 तौभी उस ने अपने आप को बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर, तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा।
18 यह कह कर भी उन्होंने लोगों को कठिनता से रोका कि उन के लिये बलिदान न करें॥

5. I कुरिन्थियों 1 : 1 (*से 2nd* ,)

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिये बुलाया गया

6. I कुरिन्थियों 6 : 19, 20

19 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?
20 क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो॥

7. रोमियो 12 : 1, 2

1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।

2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥

8. I थिस्सलुनीकियों 5 : 23

23 शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 307 : 25 (दिव्य)-30

दिव्य मन मनुष्य की आत्मा है, और यह मनुष्य को सभी चीजों पर प्रभुत्व प्रदान करता है। मनुष्य को भौतिक आधार से नहीं बनाया गया था, न ही उन भौतिक कानूनों का पालन करने पर प्रतिबंध लगाया गया है जो आत्मा ने कभी नहीं बनाए; उनका प्रांत मन की उच्च विधि में आध्यात्मिक विधियों में है।

2. 477 : 19-25

सवाल। - शरीर और आत्मा क्या हैं?
उत्तर। - पहचान आत्मा का प्रतिबिंब है, जीवित सिद्धांत, प्रेम के विविध रूपों में प्रतिबिंब है। आत्मा ही मनुष्य का पदार्थ, जीवन और बुद्धिमत्ता है, जो व्यक्तिगत है, लेकिन पदार्थ में नहीं। आत्मा कभी भी किसी भी चीज को हीन नहीं कर सकती

3. 13 : 25-32

दिव्य सिद्धांत, प्रेम की मानवीय अज्ञानता के कारण, सभी के पिता को एक शारीरिक रचनाकार के रूप में दर्शाया गया है; इसलिए पुरुष स्वयं को केवल भौतिक के रूप में पहचानते हैं, और ईश्वर की छवि या प्रतिबिंब और मनुष्य के अनन्त समावेशी अस्तित्व के रूप में मनुष्य से अनभिज्ञ हैं। त्रुटि की दुनिया सत्य की दुनिया से अनभिज्ञ है, - मनुष्य के अस्तित्व की वास्तविकता से अंधा, - संवेदना की दुनिया के लिए आत्मा में जीवन का संज्ञान नहीं है, शरीर में नहीं।

4. 62 : 20-1

हमें अधिक से अधिक बुद्धिमत्ता को महत्व नहीं देना चाहिए, लेकिन कम और कम, अगर हम बुद्धिमान और स्वस्थ होंगे दिव्य मन, जो कली और फूल बनाता है, मानव शरीर की देखभाल करेगा, यहां तक कि यह लिली को कपड़े देगा; लेकिन गलत धारणाओं, मानवीय अवधारणाओं के कानूनों में जोर देकर कोई भी भगवान की सरकार के साथ हस्तक्षेप नहीं करते हैं।

मनुष्य की उच्च प्रकृति निम्न द्वारा शासित नहीं है; यदि ऐसा होता, तो ज्ञान का क्रम उलट जाता। जीवन के हमारे झूठे विचार शाश्वत सद्भाव को छिपाते हैं, और उन बीमारियों का उत्पादन करते हैं जिनकी हम शिकायत करते हैं। क्योंकि नश्वर भौतिक नियमों में विश्वास करते हैं और मन के विज्ञान को अस्वीकार करते हैं, इससे भौतिकता पहले नहीं होती है और आत्मा का श्रेष्ठ कानून अंतिम है।

5. 280: 25-4

ठीक से समझा, एक भावुक सामग्री के रूप में रखने के बजाय, मनुष्य के पास एक संवेदनाहीन शरीर है; और ईश्वर, मनुष्य की आत्मा और सभी अस्तित्व की, अपने स्वयं के व्यक्तित्व, सद्भाव, और अमरता में सदा रहने वाले, मनुष्य में इन गुणों को लागू करते हैं, - मन के माध्यम से, कोई बात नहीं। मानवीय मतों का मनोरंजन करने और विज्ञान होने को अस्वीकार करने का एकमात्र बहाना हमारी आत्मा का नश्वर अज्ञान है, - अज्ञान जो केवल दिव्य विज्ञान की समझ के लिए उपजता है, वह समझ जिसके द्वारा हम पृथ्वी पर सत्य के राज्य में प्रवेश करते हैं और सीखते हैं कि आत्मा अनंत और सर्वोच्च।

6. 146: 6-14, 20-30

स्कूलों ने देवता में विश्वास के बजाय, ड्रग्स के फैशन पर विश्वास किया है। अपनी ही कलह को नष्ट करने के लिए मामले पर भरोसा करके, स्वास्थ्य और सद्भाव का त्याग किया गया है। ऐसी प्रणालियाँ आध्यात्मिक शक्ति की जीवन शक्ति के बंजर हैं, जिनके द्वारा भौतिक अर्थों को विज्ञान का सेवक बना दिया जाता है और धर्म क्रिस्टलाइज हो जाता है।

भौतिक चिकित्सा ईश्वर की शक्ति के लिए दवाओं का विकल्प बनाती है - यहां तक कि मन की शक्ति - शरीर को ठीक करने के लिए। ... विज्ञान "अजनबी है जो आपके द्वार के भीतर है," याद नहीं है, तब भी जब इसके बढ़ते प्रभाव व्यावहारिक रूप से इसकी दिव्य उत्पत्ति और प्रभावकारिता साबित करते हैं।

दिव्य विज्ञान बाइबिल से अपनी मंजूरी प्राप्त करता है, और बीमारी और पाप को ठीक करने में सत्य के पवित्र प्रभाव के माध्यम से विज्ञान की दिव्य उत्पत्ति का प्रदर्शन किया जाता है। सत्य की यह उपचार शक्ति उस अवधि के लिए पूर्वकाल में रही होगी, जिसमें यीशु रहते थे। यह उतना ही प्राचीन है जितना कि "प्राचीन दिन"। यह सभी जीवन के माध्यम से रहता है, और पूरे अंतरिक्ष में फैला हुआ है।

7. 309: 24-32

होने का विज्ञान यह दिखाता है कि अनंत आत्मा या आत्मा का परिमित शरीर में होना या मनुष्य का अपने निर्माता से अलग बुद्धि होना असंभव है। यह मानने के लिए एक स्व-स्पष्ट त्रुटि है कि जैविक पशु या वनस्पति जीवन जैसी कोई वास्तविकता हो सकती है, जब ऐसा तथाकथित जीवन हमेशा मृत्यु में समाप्त होता है। जीवन कभी भी एक पल के लिए विलुप्त नहीं होता है। इसलिए यह कभी संरचनात्मक नहीं है और न ही जैविक है, और कभी भी अवशोषित नहीं होता है और न ही अपने स्वयं के संरचनाओं द्वारा सीमित होता है।

8. 318: 28-2

राज्यपाल को शासित के अधीन नहीं किया जाता है। विज्ञान में मनुष्य को ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत द्वारा नियंत्रित किया जाता है, क्योंकि संख्याएँ नियंत्रित और सिद्ध होती हैं। इंटेलिजेंस संख्या में उत्पन्न नहीं होता है, बल्कि उनके माध्यम से प्रकट होता है। शरीर में आत्मा शामिल नहीं है, लेकिन मृत्यु दर, आत्मा का एक गलत अर्थ प्रकट होता है। इस भ्रम की स्थिति है कि जीवन में जीवन के साथ कोई संबंध नहीं है।

9. 350: 24-27

"वचन देहधारी हुआ." दिव्य सत्य को शरीर पर और साथ ही मन पर इसके प्रभावों से जाना जाना चाहिए, इससे पहले कि विज्ञान का प्रदर्शन किया जा सके।

10. 251: 15-27

हमें सीखना चाहिए कि मानव जाति शरीर को कैसे संचालित करती है, - चाहे वह स्वच्छता में विश्वास के माध्यम से हो, दवाओं में या इच्छाशक्ति में। हमें यह सीखना चाहिए कि क्या वे बीमारी और मृत्यु, पाप और क्षमा की आवश्यकता में विश्वास के माध्यम से शरीर पर शासन करते हैं, या इसे उच्च समझ से नियंत्रित करते हैं कि दिव्य मन सही बनाता है, तथाकथित मानव मन सत्य के माध्यम से कार्य करता है, मानव का नेतृत्व करता है मन को सभी त्रुटि से मुक्त करने के लिए, दिव्य मन को एकमात्र मन, और पाप, बीमारी, मृत्यु का मरहम लगाने वाले को खोजने के लिए। उच्च आध्यात्मिक समझ की यह प्रक्रिया मानव जाति में सुधार करती है जब तक कि त्रुटि गायब नहीं हो जाती है, और कुछ भी नहीं बचा है जो कि नाश होने या दंडित होने के योग्य है।

11. 326: 14-15

आंशिक रूप से नहीं, लेकिन पूरी तरह से, नश्वर मन का महान उपचारक शरीर का उपचारकर्ता है।

12. 395: 6-14

महान एग्जम्पलर की तरह, मरहम लगाने वाले को बीमारी के बारे में बोलना चाहिए, क्योंकि आत्मा को कॉरपोरेट इंद्रियों के झूठे सबूतों को साबित करने और मृत्यु दर और बीमारी पर अपने दावों को साबित करने के लिए छोड़ देना चाहिए। एक ही सिद्धांत पाप और बीमारी दोनों को ठीक करता है। जब दैवीय विज्ञान एक कार्तिक मन में विश्वास को खत्म कर देता है, और भगवान में विश्वास पाप में और उपचार के भौतिक तरीकों में सभी विश्वासों को नष्ट कर देता है, तो पाप, बीमारी और मृत्यु गायब हो जाएगी।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6